A detailed report on Summary of UGC minor project of Dr. Preethi K , Assistant Professor, Payyanur College, Edat P.O, Payyanur, Kannur District, Kerala under MRP(H)(plan) MRP(H)- 0382/12-13/KLKA002/UGC-SWRO dt. 23 SEP 13 entitled " SOCIABILITY IN CONTEMPORARY HINDI DALIT SHORT STORIES "

1. The Objectives Achieved through the Project

विश्व साहित्य में भी दलित साहित्य ने अपनी अलग पहचान बनायी है। अस्पृश्यता की वेदना ही उसका प्राण है। जब तक अस्पृश्यता, जातिप्रथा, वर्ण व्यवस्था का उन्मूलन नहीं होगा तब तक समानता की स्थापना नहीं होगी। दलितोत्थान केलिए साहित्य में दलितों का जीवन चित्रण होना अनिवार्य है। आज दलितों में चेतना जागृत हो रही है। मानवीय सत्ता की स्थापना शोषण रहित समाज व्यवस्था की निर्मिति दलित संघर्ष की आत्मा रही है। अतः स्पष्ट है कि दलित साहित्य सामाजिक क्रांति और नए आन्दोलन का परिणाम है। दलित साहित्य को नई दिशा प्रदान करने में दलित कहानी साहित्य भी अपनी अलग भूमिका अदा की है । दलित कहानी साहित्य दलितों के लिए आत्मसम्मान खोजने और शिक्षा द्वारा तत्कालीन जातिव्यवस्था के खिलाफ क्रांति करने की प्रेरणा देते हैं। दलित कहानी साहित्य केवल दलितों के अधिकार एवं मूल्यों तक ही सीमित नहीं बल्कि सामाजिक संदर्भो के साथ जुड़कर समूचे समाज की अस्मिता और मूल्यों की पहचान बनता है । इसलिए समकालीन हिन्दी दलित कहानियों में सामाजिकता का सही मूल्यांकन समय सापेक्ष लगता है । सामाजिक व्यवस्था और विषमता के विरुद्ध आन्दोलन खड़ा करके नए समाज का निर्माण करने में हिन्दी दलित कहानी का अपना योगदान है । इन कहानियों में चित्रित सामाजिकता का सही पहचान एवं मूल्यांकन करने का प्रयास इस अध्ययन द्वारा किया है, साथ ही अपने अधिकारों के प्रति दलित समुदाय में जागृति पैदा करके उनमें स्वाभिमान भरना और उनके ऊपर होनेवाले अन्यायों के विरुद्ध समाज को सचेत करना भी इस अध्ययन का उद्देश्य है ।

2. Achievements from the Project

समकालीन हिन्दी दलित कहानियों में सामाजिकता का अध्ययन इस पक्ष पर बल देता है कि समाज में सब मनुष्य समान है। सबको मानवीय अधिकारों के साथ जीने का अधिकार है। दलित भी सवर्णों की तरह मनुष्य है तथा उनको भी समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक सम्मान और स्वाभिमान के साथ जीने का अधिकार है। समाज में समानता, स्वतंत्रता, न्याय और नैतिकता

आदि मानवीय मूल्यों की स्थापना ही इस अध्ययन का लक्ष्य है । आम आदमी को इंसाफ दिलाना तथा जाति एवं धर्म के बंधनों से मुक्त कराना दलित कहानी साहित्य का प्रयोजन है। दलित कहानीकार अपनी कहानी द्वारा परंपरागत मूल्यों का नकार, और नए मूल्यों की स्थापना के साथ सामाजिक परिवर्तन चाहते हैं। सबको समान शिक्षा, पेशा चुनने का समान अवसर तथा अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सत्ता में समान स्थान आदि दिलाकर एक जाति-विहीन समाज के निर्माण करने में भागीदार बनने की प्रेरणा इस अध्ययन से मिली ।

3. Summary of the findings

हिन्दी दलित कहानी साहित्य दलितों के दर्द के दस्तावेज या उत्पीड़न का आख्यान है। इसलिए ये कहानियाँ प्रायः सहज, सरल और आम बोलचाल की भाषा में है। अपमानित, प्रताड़ित और वंचित दलित पात्रों में शुद्ध खड़ीबोली हिन्दी या प्रामाणिक भाषा खोजना मूर्खता होगी। इनके दर्द में छटपटाहट और भाषा में आक्रोश की आग है। प्रस्थापित व्यवस्था ने दलितों को अछूत ठहराया है। उसका स्पर्श, वाणी, छाया अपवित्र या अछूत मानी गयी है। उसका अवमूल्यन किया है। इस कारण दलित कहानी साहित्य में तीव्र आक्रोश व्यक्त हुआ है। वेदना, विद्रोह और नकार दलित कहानी साहित्य के तीन सूत्र है। दलित कहानीकार ने प्रस्थापित व्यवस्था को नकार दिया है। इस नकार से ही विद्रोह का निर्माण हुआ है। दलित चेतना का सबसे उग्र और तीव्र अंश यह विद्रोह है। इस विद्रोह के मूल में सामाजिक, आर्थिक अन्याय के साथ सांस्कृतिक उपेक्षा भी होती है। इस देश के जो भी श्रमिक, शोषित, पीड़ित दलित एवं व्यथित है इन सबकी संवेदना दलित कहानी साहित्य द्वारा व्यक्त होती दिखाई देती है। वर्ण और जाति व्यवस्था के कारण निर्माण हुई संवेदना ही दलित संवेदना है। दलित कहानी साहित्य वर्ण-व्यवस्था एवं जाति-व्यवस्था का खंडन करके मानवतावाद का समर्थन करता है। साथ ही सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन लाने की मांग भी करता है। यह सच है कि समकालीन दलित कथाकारों में साहित्य की शास्त्रीय धारा के अनुरूप कहानी-कला का अभाव है। किन्तु चेतना की सार्थक अभिव्यक्ति, संवेदनाओं की मार्मिकता और सामाजिक सरोकारों के संघर्षशील तेवर आदि दलित कथाकारों की रचनाओं में देखने को मिलते हैं। दलित कहानियों का मूल स्वर दलित जीवन के भोगे हुए यथार्थ के चित्रण द्वारा दलित जीवन की कथा-व्यथा, सामंती आतंक और मनुवादी व्यवस्था के विरुद्ध तीव्र आक्रोश और विरोध दर्ज करना है। अतः दलित कहानी साहित्य के मूल में सामाजिक सरोकार की

भावना निहित है। वे वर्तमान सवर्णवादी सामाजिक ढांचे को ध्वंस कर एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के पक्षधर है।

दलित कहानीकार अपने सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ रचनाकर्म से जुडकर साहित्य की सृजनात्मकता में मानवीय सरोकारों, संवेदनाओं और स्वतंत्रता, भाईचारे की भावनाओं को स्थापित करता है। यह सिर्फ दलितों के अधिकार, स्वतंत्रता, समानता एवं मूल्यों तक ही सीमित न होकर सामाजिक सन्दर्भों के साथ जुडकर समूचे भारत की अस्मिता और मूल्यों की पहचान बनता है। इसप्रकार दलित कहानी साहित्य सामाजिक सापेक्ष है। यह साहित्य की मूल संवेदना के साथ-साथ मनुष्य की स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व की भावना को सर्वोपरी मानता है। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक गुलामी से मुक्ति ही इसका प्रयोजन है। दलितोत्थान हेतु लिखा गया दलित कहानी साहित्य दलितों के भोगे हुए सच पर आधारित है। इस प्रकार जमीन से जुड़े दलित कहानी साहित्य शोषित, उपेक्षित, सर्वहारा वर्ग से संबंधित है जो दलितों की दशा और दिशा को इंगित करता है और जिसमें विद्रोह और उद्‌बोधन के साथ संवेदना जागृत करने की ऊर्जा भी है।

4. Contribution to the Society

समकालीन हिन्दी दलित कहानी साहित्य केवल दलितों के अधिकार एवं मूल्यों तक ही सीमित नहीं बल्कि सामाजिक संदर्भों के साथ जुडकर समूचे भारत की अस्मिता और मूल्यों की पहचान बनता है। इन कहानियों में निहित दलित चेतना अलगाववाद की जगह समता, एकता और भाईचारे का समर्थन करती है। वह मानव मुक्ति संघर्ष में मानव की स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय का पक्षधर है और सामाजिक बदलाव के लिए प्रतिबद्ध भी है । इस अध्ययन से प्रेरणा पाकर कन्नूर विश्वविद्‌यालय के अपने विद्‌यार्थियों को उनके पाठ्‌यक्रम के परियोजना के विषय स्वरूप दलित साहित्य के विविध आयाम चुनने का अवसर देकर उन्हें अवगत कराया कि दलित भी सवर्णों की तरह मनुष्य है, उनको भी स्वतंत्रता, न्याय, सामाजिक सम्मान और स्वाभिमान के साथ जीने का अधिकार है ।